इस तरफ चबूतरा धाम का, आए मिल्या बन इत।
महामत कहे इन अकलें, क्यों कर करूं सिफत।। २७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस फूलबाग को उत्तर की तरफ से लाल चबूतरा आकर मिलता है। यहां की अक्ल से वहां की शोभा का कैसे वर्णन करें?

।। प्रकरण ।। १० ।। चौपाई ।। ६४३ ।।

लाल चबूतरा बड़े जानवरों के मुजरे की जगह

ए जो बड़ा चबूतरा, लगता चल्या दिवाल।
इत छाया बड़े बन की, ए बैठक बड़ी विसाल।। १ ।।

रंग महल की उत्तर की दिशा में फूल बाग के वायब कोने के चहबच्चे से लगा १२०० मन्दिर लम्बा ३० मन्दिर चौड़ा रंग महल की दीवार से लगता हुआ लाल चबूतरा है जिसके ऊपर बड़े वन की छाया है। नीचे सुन्दर चालीस बैठकें बनी हैं।

सोभा लेत अति कठेड़ा, तमाम चबूतर।
तले लगते दरखत, सब पेड़ बराबर।। २ ।।

चबूतरे के किनारे पर सुन्दर कठेड़ा लगा है और उसके नीचे बड़े वन की ४१ वृक्षों की ४१ हारें आती हैं। सभी पेड़ों की दूरी एक-एक हांस की है।

पेड़ लम्बे उपली छातलों, छत्रियां छज्जों पर।
लम्बे छज्जे बड़ी बैठक, इत मोहोला लेत जानवर।। ३ ।।

यह पेड़ लम्बे सीधे दस भोम तक गए हैं और इनकी छत रंग महल की चांदनी के छज्जों के साथ मिलती है। यहां लाल चबूतरे पर बैठकर श्री राजश्यामाजी तथा सखियां जानवरों का मुजरा देखते हैं।

जवेर ख्वाब जिमी के, ए खूब ख्वाब में लगत।
ए झूठ निमूना क्यों देऊं, अर्स बकाके दरखत।। ४ ।।

इस सपने की जमीन के नग स्वप्न की जमीन में ही अच्छे लगते हैं, इसलिए परमधाम के अखण्ड वृक्षों की शोभा को यहां का नमूना कैसे दें?

रोसनी इन दरखत की, पेड़ डार या पात।
नूर इन रोसनका, अवकासमें न समात।। ५ ।।

इन वृक्षों के पेड़, डाली या पत्तों का नूर (तेज) आकाश में नहीं समाता।

एक डार जरे की रोसनी, भराए रही आसमान।
तो कौन निमूना इनका, जो दीजिए इनके मान।। ६ ।।

पेड़ों की एक छोटी डाली की रोशनी से आकाश भर जाता है तो फिर पूरे पेड़ की शोभा किन शब्दों से कही जाए?

जिमी रचंक रेत की, कछू दिया न निमूना जात।
तो क्यों कहूं फल फूल पात की, और झरोखे मोहोलात।। ७ ।।

वहां की जमीन के रेत के कण के लिए भी यहां नमूना नहीं है, तो फिर परमधाम के फल, फूल, पत्ते, झरोखे और मोहोलातों का वर्णन कैसे करें?

Nijanand App

ऊपर तमाम चबूतरे, बिछाया है दुलीच।
दोऊ तरफों बैठी रूहें, हक हादी सिंघासन बीच।। ८ ।।

पूरे लाल चबूतरे पर सुन्दर दुलीचा बिछा है। श्री राजश्यामाजी के सिंहासन के दोनों तरफ सखियां बैठती हैं।

बैठे तिन सिंघासन, हक अपना मिलावा ले।
इन अंग की अकलें, क्यों कहूं खूबी ए।। ९ ।।

श्री राजश्यामाजी बीच में सिंहासन पर सखियों को साथ लेकर बैठते हैं। इस संसार के तन की जबान से इस सुन्दरता का वर्णन कैसे करूं?

बैठे जुगल किसोर, ऊपर दोऊ के छत्र।
आगे जिकर करें कई विधसों, और बजावें बाजंत्र।। १० ।।

श्री राजश्यामाजी के शीश पर सिंहासन में दो छत्र लगे हैं और उनके आगे कई तरह से बाजे बजाते हुए जानवर धनी के गुण गाते हैं।

आवत मोहोलें मुजरे, इतका जो लसकर।
ताके एक बालके नूरसों, रही भराए जिमी अंबर।। ११ ।।

यहां जानवरों के लश्कर (समूह) श्री राजश्यामाजी को मुजरा दिखाने आते हैं। ऐसे जानवरों के एक बाल की रोशनी से आकाश भर जाता है।

देखावत रूहन को, पसु पंखी लराए।
हंसत हक अरवाहों सों, नए नए खेल खेलाए।। १२ ।।

श्री राजजी सखियों को पशु-पक्षियों को लड़ाकर दिखाते हैं। इस तरह से नए-नए खेल दिखाकर श्री राजश्यामाजी, रूहें खुश होते हैं।

कई गरुड़ गरजें लड़ें, कई मोर मुरग कुलंग।
लड़ें चढ़ें ऊंचे आसमान लों, फेर के लड़ें जंग बंग।। १३ ।।

यहां कई गरुड़ पक्षी आवाज करते हुए लड़ते हैं। ठीक इसी तरह मोर, मुर्गे, कुलंग आकाश में लड़ते हैं और लौटकर लड़ाई की कला दिखाते हैं।

केसरी काबली हाथी, बाघ बीघ बांदर।
पस्व घोड़े दीपड़े, लड़ें सूअर सांम्हर।। १४ ।।

यहां पर बब्बर शेर, काबुली घोड़े, हाथी, बाघ, भेड़िए, बन्दर, घोड़े, तेंदुए, सांभर आपस में लड़ते हैं।

चीते चीतल बैल बकर, लड़ें बरबरे हरन।
जरख चरख रोझ रीछड़े, लड़त आवें अरन।। १५ ।।

चीते, चीतल, बैल, गाय, हिरन, लकड़बग्घा, नील गाय, रीछ, जंगली भैंसा लड़ते हुए आते हैं।

Nijanand App

लोखरी कूकरी जंबुक, लड़त हैं मेढे।
खरगोस बिल्ली मूस्क, लरें छिकारे गैंड़े।। १६ ।।

लोखरी (बिल्ली), कुकड़ी (मुर्गी), गीदड़ (सियार) भेड़, खरगोश (शशक) चूहे, लोमड़ी, छिकरा गैंडा सब आपस में लड़ाई का खेल दिखाकर अपने धनी श्री राजश्यामाजी और सखियों को रिझाते हैं।

कई जातें पसुअन की, और कई जातें जानवर।
हिसाब न आवे गिनती, ए खेल कहूं क्यों कर।। १७ ।।

यहां कई प्रकार के पशु हैं, कई तरह के जानवर हैं जिनकी गिनती नहीं है। यह अपने खेल करके धनी को रिझाते हैं। उस शोभा को कैसे कहूं?

कई रिझावें लड़ के, कई नाच मिलावें तान।
कई उड़ें कूदें फांदहीं, कई बोलत मीठी बान।। १८ ।।

कई लड़ाई करके दिखाते हैं। कई नाच के दिखाते हैं तथा कई स्वर में स्वर मिलाकर आवाज करते हैं। कई उड़ते हैं, कूदते-फांदते हैं और कई मीठी वाणी बोलते हैं।

कई देत गुलाटियां, कई साधत स्वर समान।
कई खेलें चलें टेढ़े उलटे, कई नई नई मुख बान।। १९ ।।

कई गुलाटियां खाते हैं। कई स्वर साधकर गाते हैं। कई खेलते हैं, चलते हैं, कई टेढ़े-उलटे होते हैं और अपने मुखों से नई-नई तरह की आवाज करते हैं।

कई नाचत हैं पांउं सों, कई नचावें पर।
कई नाचत हैं उड़ते, कई हाथ चोंच सिर लर।। २० ।।

कई पैर से नाचते हैं। कई परों को नचाते हैं। कई उड़कर नाचते हैं। कई हाथ, चोंच और सिर से लड़कर रिझाते हैं।

कई हंसावत हकको, भांत भांत खेल कर।
कोई हिकमत छिपी ना रहे, ए ऐसे पसु जानवर।। २१ ।।

कई श्री राजजी को हंसकर रिझाते हैं और कई तरह-तरह के खेल करके, अर्थात् ऐसी कोई कला छिपी नहीं रह जाती जो पशु और जानवरों को मालूम न हो।

क्यों कहूं इन सुखकी, जो इन मेले में बसत।
ए सोई रूहें जानहीं, जो इन हक की सोहोबत।। २२ ।।

इस सुख का वर्णन कैसे करूं? जो इस मेले में परमधाम में शामिल होते हैं उनकी आत्मा ही जानती है? जिनकी श्री राजजी महाराज से निसबत है।

क्यों कहूं इन सुखकी, जो हक देत मुख बोल।
क्यों देऊं निमूना इनका, याको रूहें जानें तौल मोल।। २३ ।।

श्री राजजी महाराज जब अपने मुख से कुछ बोलते हैं तो बेशुमार सुख होता है। उसका नमूना संसार में कैसे दें? सखियां ही इस स्वाद को जानती हैं।

Nijanand App

क्यों कहूं इन सुखकी, जो धनी देत कर हेत।
आराम इन इस्क का, सोई जाने जो लेत।। २४ ।।

इस सुख का कैसे वर्णन करूं जो श्री राजजी महाराज बड़े प्यार से देते हैं। इस इश्क के आनन्द को लेने वाले ही जानते हैं।

क्यों कहूं सुख सनमुख का, जो पिलावें नैनों सों।
ए सोई रूहें जानहीं, रस आवत हैं जिनकों।। २५ ।।

श्री राजजी महाराज के सामने नजर से नजर मिलाने में जो सुख श्री राजजी महाराज देते हैं, यह वही रूहें जानती हैं जिनको यह सुख मिलता है।

क्यों कहूं इन सुखकी, धनी देवें इस्कसों।
ए सोई रूहें जानहीं, हक देत हैं जिनकों।। २६ ।।

इस सुख की बातें कैसे कहूं जो श्री राजजी महाराज इश्क से देते हैं। इनको वही रूहें जानती हैं जिनको श्री राजजी महाराज देते हैं।

क्यों कहूं इन सुखकी, हक देत कर प्रीत।
जो ए प्याले लेत हैं, सोई जानें रस रीत।। २७ ।।

उस सुख का बयान कैसे करूं जो श्री राजजी महाराज प्रेम से देते हैं। इन इश्क के प्यालों को जो कोई लेता है वही इसकी लज्जत को समझता है।

क्यों कहूं सुख नजीक का, जो इन हककी सोहोबत।
ए सोई रूहें जानहीं, जो लेवें हर बखत।। २८ ।।

श्री राजजी महाराज के साथ में और पास रहने में जो सुख है, वह कैसे कहें? यह वही रूहें जानती हैं, जो इसे हमेशा लेती हैं।

क्यों कहूं इन सुखकी, जासों हक रमूज करत।
ए सोई रूहें जानहीं, जिनका बासा इत।। २९ ।।

जिससे श्री राजजी महाराज मजाक (रमूजें) करते हैं उस सुख को कैसे बताऊं? यह वही रूहें जानती हैं, जो वहां रहती हैं।

क्यों कहूं इन सुखकी, जासों हक करें इसारत।
ए सोई रूहें जानहीं, सामी सैन से समझावत।। ३० ।।

जिसको श्री राजजी महाराज इशारे करते हैं उस सुख को वही रूहें जानती हैं जो सामने श्री राजजी महाराज के इशारे समझती हैं।

क्यों कहूं इन सुखकी, जो हक देत दायम।
ए सोई रूहें जानहीं, जो पिएं सराब कायम।। ३१ ।।

श्री राजजी महाराज जो हमेशा अखण्ड सुख देते हैं उसको कैसे कहूं? यह वही रूहें जानती हैं जो अखण्ड इश्क की मस्ती पीती हैं।

Nijanand App

क्यों कहूं इन सुखकी, जासों हक करत हैं हांस।
ए सोई रूहें जानहीं, जो लेत खुसाली खास।। ३२ ।।

जिससे श्री राजजी महाराज हंसते हैं उस सुख को कैसे बताऊं? यह वही रूहें जानती हैं जो खासल खास हैं और खास सुख लेती हैं।

क्यों कहूं इन सुखकी, जाए हक लेत बोलाए।
सनमुख बातें करके, अमीरस नैन पिलाए।। ३३ ।।

श्री राजजी महाराज जिसको बुलाते हैं उसके सामने इश्क की बातें करके नैनों से अमृतरस पिलाते हैं। उस सुख का कैसे वर्णन करूं?

क्यों कहूं इन रूहनकी, जासों धनी बोलत सनमुख।
नहीं निमूना इनका, एही जानें ए सुख।। ३४ ।।

इन रूहों के सुख को क्या कहूं जिनको धनी सामने बुलाकर बातें करते हैं? इस सुख को वही रूहें जानती हैं। इसका कोई नमूना नहीं है।

क्यों कहूं इन सुखकी, जो प्यारी पिउके दिल।
सनमुख बातां करत हैं, इन खावंद सामिल।। ३५ ।।

जो सखी श्री राजजी महाराज को दिल से प्यारी है तथा श्री राजजी महाराज के सामने जाकर बातें करती है, उस सुख को कैसे कहूं?

क्यों कहूं ताके सुखकी, हक बातें करें दिल दे।
ए रूहें प्याले जानहीं, जो हाथ धनीके लें।। ३६ ।।

श्री राजजी महाराज अपना दिल देकर जिससे बातें करते हैं, उस इश्क के प्याले के सुख को वही रूहें जानती हैं जो धनी के हाथ से लेती हैं। उसका मैं वर्णन कैसे करूं?

क्यों कहूं इन सुखकी, जाको निरखत धनी नजर।
प्याले आप धनीय को, सामी देत भर भर।। ३७ ।।

वह रूहें जिनको धनी नजर भर देख लेते हैं और वह इश्क के प्याले भर-भर धनी को देती हैं, उस सुख का बयान मैं कैसे करूं?

क्यों कहूं इन सुखकी, जो हकसों नैनों नैन मिलाए।
फेर फेर प्याले लेत हैं, आगूं इन धनी के आए।। ३८ ।।

जो रूहें हक की नजर से नजर मिलाती हैं और बार-बार धनी के सामने आकर इश्क के प्याले लेती हैं, उस सुख का बयान कैसे करूं?

क्यों कहूं इन सुखकी, जो दूर बैठत हैं जाए।
तितथें धनी बोलाएके, ढ़िग बैठावत ताए।। ३९ ।।

जो सखी दूर जाकर बैठती है और धनी उसे वहां से बुलाकर अपने पास बिठा लेते हैं, उस सुख का कैसे बयान करूं?

Nijanand App

क्यों कहूं इन सुखकी, जाको देत धनी चित्त।
सो धनी आगूं आएके, सामी मीठी बान बोलत।।४०।।

जिस रूह को धनी अपने चित्त से चाह लेते हैं वह धनी के आगे आकर मीठी वाणी बोलती है। उस सुख को कैसे कहूं?

क्यों कहूं सुख रूहन के, फेर फेर देखें हक नैन।
खावंद नजीक बुलाए के, बोलत मीठे बैन।।४१।।

रूहों के उस सुख को कैसे कहूं जो बार-बार श्री राजजी महाराज से नजर मिलाती हैं और श्री राजजी महाराज उन्हें पास में बुलाकर मीठी बोली बोलते हैं।

क्यों कहूं सुख नजीकियों, जाको देखें हक नजर।
बातें इस्क पिउ अंगे, पिएं प्याले भर भर।।४२।।

उस सुख का कैसे बयान करूं जिसे श्री राजजी महाराज अपनी नजर से देखते हैं। वह सखी अपने पिया से बातें करके इश्क के प्याले भर-भरकर पीती हैं।

क्यों कहूं सुख रूहन के, फेर फेर देखें मुख पिउ।
नैन बैन सुख देत हैं, चुभ रेहेत माहें जिउ।।४३।।

इन रूहों के सुख को कैसे कहें जो बार-बार अपने धनी के मुख को देखती हैं और श्री राजजी महाराज के नैनों के और मीठे वचनों के सुख रूह के हृदय में चुभ जाते हैं।

क्यों कहूं सुख रूहन के, जो हक बड़ीरूह अंग नूर।
आठों जाम इन पिउसों, हंस हंस करें मजकूर।।४४।।

रूहों के सुख का कैसे बयान करूं जो श्री राजजी के अंग श्री श्यामाजी के नूरी अंग हैं और दिन-रात धनी से हंस-हंसकर बातें करती हैं।

क्यों कहूं सुख रूहन के, जो इन पिउ के आसिक।
भर भर प्याले लेवहीं, फेर फेर देवें हक।।४५।।

इन रूहों के सुख को कैसे कहूं जो ऐसे धाम धनी के आशिक है जिन्हें बार-बार श्री राजजी महाराज इश्क के प्याले देते हैं और रूहें भर-भरकर इश्क के प्याले पीती हैं।

क्यों कहूं सुख रूहन के, जो लगे इन हकके कान।
करें मजकूर मजाक सों, साथ इन सुभान।।४६।।

उस रूह के सुख का कैसे वर्णन करूं जो श्री राजजी महाराज के कान में कुछ कहकर मजाक कर देती हैं?

क्यों कहूं सुख इन रूहन के, जासों खेलें हंसें सनमुख।
पार नहीं सोहागको, इनपर धनीको रुख।।४७।।

जिस रूह के साथ श्री राजजी महाराज हंसते हैं, खेलते हैं और अपनी मेहर की दृष्टि करते हैं, उस सोहागिनी के सुख का पारावार नहीं होता। मैं उसके सुख का कैसे वर्णन करूं?

Nijanand App

क्यों कहूं सुख रूहन के, इन पिउसों रस रंग।
आठों जाम आराममें, एक जरा नहीं दिल भंग।।४८।।

मैं उन रूहों के सुख का कैसे वर्णन करूं जो श्री राजजी महाराज के आनन्द में डूबी रहती हैं और चित्त को वहां से नहीं हटातीं?

क्यों कहूं सुख रूहन के, जो आठों पोहोर पिउ पास।
रात दिन सोहोबत में, करें हांस विलास।।४९।।

श्री राजजी महाराज के पास जो रूहें रात-दिन सोहोबत में रहती हैं और हंसी तथा विनोद करती हैं, उनके सुख को मैं कैसे कहूं?

क्यों कहूं सुख रूहन के, जो आठों जाम दिन रात।
प्रेम प्रीत सनेह की, भर भर प्याले पिलात।।५०।।

उन रूहों के सुख को कैसे कहूं जिन्हें धनी आठों पहर प्रेम, प्रीति, स्नेह से भरे इश्क के प्याले पिलाते हैं।

क्यों कहूं सुख रूहन के, जिनका साकी ए।
हक प्याले इस्क के, भर भर रूहों को दे।।५१।।

उन रूहों के सुख को कैसे कहूं जिनको इश्क के प्याले पिलाने वाले स्वयं श्री राजजी महाराज हैं तथा वह इश्क के प्याले लेकर भर-भरकर रूहों को देते हैं।

क्यों कहूं इन सुखकी, जो सदा सोहोबत हक जात।
जो इस्क आराम में, सो क्यों कहूं इन मुख बात।।५२।।

उन रूहों के उस सुख का कैसे वर्णन करूं जो सदा एक साथ रहती हैं और जो इश्क और आराम की बातें करती हैं।

क्यों कहूं इन सुखकी, जिनका हक खावंद।
आठों जाम रूहन पर, हक होत परसंद।।५३।।

इनके सुख का कैसे बयान करूं जिनके पति श्री राजजी महाराज हैं और जो आठों पहर रूहों पर फिदा हैं।

क्यों कहूं इन सुखकी, जो ख्वाब में गैयां भूल।
याद देने सुख अर्स के, हकें भेज्या एह रसूल।।५४।।

इस सुख की कैसे बात कहूं जो रूहें खेल में आकर भूल गईं और उन्हें घर के सुख याद कराने के लिए श्री राजजी महाराज ने अपने रसूल को भेजा।

क्यों कहूं सुख हांसीय को, जो ख्वाब में दैयां भुलाए।
ऊपर फेर फेर याद देत हैं, पर फरामोसी क्योंए न जाए।।५५।।

इस हंसी के सुख का कैसे बयान करूं जो श्री राजजी महाराज ने स्वप्न में भुला दिया है, पर फिर भी ऊपर से बार-बार याद दिलाते हैं, परन्तु फरामोशी किसी तरह से नहीं हटती।

Nijanand App

क्यों कहूं सुख इनका, जासों हक हांसी करत।
ए विध कहूं मैं कितनी, जो रूहों हक खेलावत।।५६।।

उस सुख का कैसे बयान करूं जिस पर श्री राजजी महाराज हंसते हैं? उस हकीकत का कैसे बयान करूं जिससे श्री राजजी महाराज रूहों को खेल खिलाते हैं?

क्यों कहूं इन रूहन की, हक देखावें कई सुख।
दई सुख बका लज्जत, ख्वाब देखाए के दुख।।५७।।

उन रूहों की क्या कहूं जिन्हें श्री राजजी महाराज कई तरह के सुख दिखाते हैं? अखण्ड घर (परमधाम) में खेल के दुःख को दिखाकर लज्जत देते हैं।

क्यो कहूं सुख रूहन के, जो लेवत आठों जाम।
बिना हिसाबें दिए आराम, हक का एही काम।।५८।।

रूहों के सुख का कैसे वर्णन करूं जिसे वह रात-दिन बिना हिसाब आनन्द लेती हैं। आनन्द देने का एक ही काम श्री राजजी महाराज का है।

वास्ते इन रूहन के, परहेज लिया हकें ए।
आठों जाम फेर फेर देऊं, सुख अर्सका जे।।५९।।

श्री राजजी महाराज ने परमधाम में आठों पहर दिन-रात रूहों को सुख देने का ही नियम बना रखा है।

अब क्यों कहूं इन सुखकी, लिया ऐसा परहेज हक।
जैसा बुजरक साहेब, सुख भी तिन माफक।।६०।।

अब इस सुख का वर्णन कैसे करूं जिसे श्री राजजी महाराज ने रूहों को देने का नियम बना रखा है। श्री राजजी महाराज की जितनी बड़ी साहेबी है, सुख भी उसी के समान हैं।

ए सुख इन केहेनीय में, क्योंए किए न आवत।
देखो दिल विचार के, कछू तब पाओ लज्जत।।६१।।

यह सुख कहने में नहीं आता। दिल से विचार करके देखो तब कुछ लज्जत मिलेगी।

आराम अर्स बका मिने, हक दिल दे देवें सुख।
ए सुख इन आकार से, क्यों कर कहूं इन मुख।।६२।।

अखण्ड परमधाम में श्री राजजी महाराज अपने दिल से रूहों को सुख देते हैं। मैं संसार के तन से (मुख से) ऐसे सुख कैसे कहूं?

ठौर बका अर्स कह्या, और खावंद नूरजमाल।
इन दरगाह रूहों के सुख, क्यों कहूं फैल हाल।।६३।।

हमारे धनी (खावंद) श्री राजजी महाराज हैं और घर अखण्ड परमधाम है। इस परमधाम में रूहें (आत्माएं) कितने आनन्द और मस्ती से रहती हैं उसका कैसे वर्णन करूं?

Nijanand App

ए सुख रूह कछू जानहीं, पर केहेनी में आवत नाहें।
ख्वाब वजूद की अकलें, क्यों कर आवे जुबाएं।। ६४ ।।

यह रूहें ही कुछ सुख समझती हैं जो कहनी में नहीं आता तो संसार के तन और जबान से कैसे कहूं?

अर्स अजीम का खावंद, रमूज करे दिल दे।
अपने अर्स अरवाहों सों, क्यों कहे जुबां इन देह।। ६५ ।।

परमधाम के श्री राजजी महाराज रूहों को दिल से मजाक करते हैं। उसका वर्णन इस तन और जबान से कैसे करूं?

क्यों कहूं सुख हांसीय का, वास्ते हांसी किए फरामोस।
फेर फेर उठावें हांसीय को, वह टलत नहीं बेहोस।। ६६ ।।

उस हंसी के सुख का कैसे बयान करूं जिसके वास्ते श्री राजजी ने फरामोशी दी और बार-बार हंसी के वास्ते ही उठाते हैं और वह फरामोशी नहीं हटती।

आप फरामोसी देयके, ऊपर से जगावत।
क्यों जागें बिना हुकमें, हक इन विध हांसी करत।। ६७ ।।

स्वयं श्री राजजी महाराज फरामोशी देकर और ऊपर से जगाते हैं। फिर बिना हुकम के रूहें कैसे जागें? श्री राजजी महाराज इस तरह की हंसी करते हैं।

ए हांसी फरामोसीय की, होसी बड़ो विलास।
जागे पीछे आनंद को, अंग न मावत हांस।। ६८ ।।

इस फरामोशी की हंसी में बड़ा आनन्द होगा। जागने के बाद हंसी और आनन्द अंग में नहीं समाएगा।

अनेक सुख देने को, साहेबें दई फरामोसी।
जगावते भी जागे नहीं, एही हांसी बड़ी होसी।। ६९ ।।

बहुत (अनेक) सुख देने के वास्ते ही श्री राजजी ने फरामोशी दी है और अब जगाने पर नहीं जागते। यही बड़ी हांसी (हंसी) होनी है।

अनेक सुख दिए अर्स में, सुख फरामोसी नाहीं कब।
हंस हंस गिर गिर पड़सी, ए सुख ऐसा देखाया अब।। ७० ।।

परमधाम में बहुत सुख श्री राजजी महाराज ने दिए, परन्तु फरामोशी का सुख कभी नहीं दिया है। अब यह ऐसा सुख दिया है कि सभी उठने के बाद हंस-हंसकर गिरती-पड़ती आनन्द लेंगी।

खिन एक विरहा ना सहें, सो सौ बरस सहें क्यों कर।
फरामोसी इन हक की, कोई हांसी ना इन कदर।। ७१ ।।

जो रूहें एक क्षण का वियोग सहन नहीं कर सकतीं, वह सौ वर्ष का वियोग कैसे सहें? श्री राजजी महाराज की फरामोशी ऐसी ही है। इसके सामने कोई हंसी नहीं है।

Nijanand App

ए सुख आनंद फरामोस को, कह्यो जाए ना अलेखे ए।
ए सुख जागे पीछे चाहे नहीं, सुख दिए फरामोसी जे।।७२ ।।

फरामोशी के आनन्द का सुख बेशुमार है जिसका कहना सम्भव नहीं है। जागने के बाद इस सुख को पीछे कोई नहीं चाहेगा, जो फरामोशी से मिला है।

सुख तो अलेखे पाइया, पर इन सुख ऐसी बात।
एक वल पड़या आए बीच में, ताथें ए सुख रूहें न चाहत।।७३ ।।

श्री राजजी महाराज की रूहों ने बेशुमार सुख लिए, पर इस सुख की ऐसी बात है कि इसमें सबसे बड़ी कठिनाई धनी से जुदा होने की है, इसलिए रूहें इस सुख को नहीं चाहतीं।

अनेक हांसी होएसी, अनेक उपजसी सुख।
इस्क तरंग कई बढ़सी, ऐसा देखाया फरामोसी दुख।।७४ ।।

कई प्रकार की हंसी होगी और कई तरह के सुख भी मिलेंगे। कई तरह के इश्क की तरंगें भी मिलेंगी। ऐसा यह फरामोशी का दुःख है जो हमें दिखाया है।

कई सुख हांसी फरामोस के, कई हजूर सुख खिलवत।
कई सुख पसु पंखियन के, कई सुख मोहोलों बैठत।।७५ ।।

इस फरामोशी के खेल की हंसी के सुख बेशुमार हैं। कई तरह के सुख श्री राजजी महाराज एकान्त में देते हैं। कई सुख पशु-पक्षियों के द्वारा वहां मिलते हैं और कई रंग महल में बैठक का सुख मिलता है।

कई सुख चबूतर के, कई कठेड़े गिलम।
कई सुख बीच तखत के, कई सुख देत बैठ खसम।।७६ ।।

धाम के इस लाल चबूतरे के कई सुख हैं। कई तरह के सुख कठेड़े और गिलम (गलीचा) और बीच में श्री राजजी श्री श्यामाजी के सिंहासन के मिलते हैं, जहां बैठकर श्री राजजी रूहों को आनन्द देते हैं।

कई सुख ऊपर बैठक के, कई सुख दरखतों छात।
कई सुख तले बड़े बिरिख के, झूमत हैं ऊपर मोहोलात।।७७ ।।

लाल चबूतरे के ऊपर चालीस हांसों की चालीस बैठकों के कई सुख हैं। कई सुख बड़े वन के वृक्षों की छाया के हैं और कई सुख उन बड़े वन के वृक्षों के हैं जो रंग महल की चांदनी से लगे हैं।

फेर कहूं सुख तले बन के, ए बन बड़ा विस्तार।
भर चबूतरे आगूं चल्या, मिल्या मधुबन किनार।।७८ ।।

फिर नीचे बड़ा वन है जो पूरे चबूतरे के सामने है और आगे बढ़ता हुआ मधुवन से लगता है उसके सुख को कैसे कहूं?

मधुबन की किन विध कहूं, बन जाए लग्या आसमान।
पुखराज अर्स के बीच में, ए सिफत न होए बयान।।७९ ।।

मधुवन के वृक्ष जो ऊपर आसमान तक गए हैं और पुखराज और रंग महल के बीचोंबीच आए हैं, उनकी सिफत का कैसे बयान करूं?

Nijanand App

लिबोई केल के घाट जो, ताके सिरे मिले आए इत।
बुजरक बन मधुबन का, मिल्या जोए किनारे जित।। ८० ।।

लिबोई और केल के घाट के कोने इस बड़े वन को आकर मिलते हैं। यह बड़ा मधुवन जमुनाजी के किनारे तक जाता है।

और फिरवल्या पुखराज को, सो पोहोंच्या जाए लग दूर।
चढ़ पुखराज जब देखिए, आए तले रह्या हजूर।। ८१ ।।

फिर पुखराज पहाड़ को घेरकर दूर-दूर तक जाता है। पुखराज पहाड़ पर चढ़कर जब देखें तो लगता है कि यह पास में ही है।

सुख हक का महामत जानहीं, या जानें मोमिन।
दूजा नहीं कोई अर्स में, बिना बुजरक रूहन।। ८२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज के इन सुखों को एक मैं ही जानती हूं या मोमिन जानते हैं। दूसरा इनसे महान और कोई अर्श में है नहीं।

।। प्रकरण ।। ११ ।। चौपाई ।। ७२५ ।।

फेर कहूं तले बनकी, जो बन बड़ा विस्तार।
भर चबूतरे आगूं चल्या, जाए पोहोंच्या केलके पार।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि अब उत्तर दिशा में नीचे दस हांस चौड़ा और सत्रह हांस लम्बा ताड़वन आया है जो धाम चबूतरे से आगे केल के घाट तक जाता है।

जो बन आया चेहेबच्चे, सोभा अति रोसन।
छाया करी जल ऊपर, तीनों तरफों बन।। २ ।।

इस ताड़वन के अन्दर खड़ोकली का चहबच्चा एक हांस लम्बा-चौड़ा सुन्दर शोभा देता है। इसके तीन तरफ से ताड़ के वृक्षों ने आकर जल पर छाया की है।

ऊपर झरोखे मोहोल के, जल पर बने जो आए।
इन चेहेबच्चे की सिफत, मुख थें कही न जाए।। ३ ।।

ऊपर रंग महल में यहां झरोखे हैं (जो लाल चबूतरे में नहीं थे)। जो जल पर एक के ऊपर एक आए हैं। इस खड़ोकली की महिमा मुख से वर्णन करने में नहीं आती।

कई बन हैं इत ताड़ के, कई खजूरी नारियर।
और नाम केते लेऊं, बट पीपर सर ऊमर।। ४ ।।

यहां पर कई वृक्ष ताड़ के हैं, कई खजूर के तथा कई नारियल के हैं और भी नाम कहां तक लूं? बट, पीपल और ऊमर (गूलर) के भी वृक्ष हैं।

ए बन गेहेरा दूर लग, इत आए मिल्या केल घाट।
जमुना जल किनार लों, छाया चली दोरीबन्ध ठाट।। ५ ।।

यह ताड़वन दूर तक फैला है और केल घाट के कोने तक जाता है (अर्थात् दस मन्दिर की जगह तक जाता है)। यह केल का घाट इन ताड़वन के वृक्षों से लगता हुआ जमुनाजी के किनारे तक सीधा चला गया है।

Nijanand App